

HINDI FILE



**DREAM**  
FOR NATION



**DARE**  
TO SERVE



**DELIVER**  
WITH INTEGRITY

# DAILY PRACTICE QUESTIONS

**BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM**

DATE : **JULY 14, 2026**



Comprehensive  
Coverage



Exam-Focused  
Analysis



Concept Clarity  
& Insights



Practice MCQs  
with Explanation



Daily Updates,  
Better Results



**CONTACT INFO:**

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



**EMAIL ID:**

info@sixsigmaias.com



**WEB PAGE:**

www.sixsigmaias.com



**ADDRESS:**

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,  
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

## दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

### प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मौर्योत्तर काल में, 'निगम' (Nigama) शब्द का प्रयोग विशेष रूप से (exclusively) अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में लगे व्यापारियों के संघों को दर्शाने के लिए किया जाता था।
2. गुप्त काल के अभिलेखों में 'पुण्य-शाला' (Punya-shala) का संदर्भ उन संस्थाओं के रूप में मिलता है जहां राज्य के खर्च पर धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक  
(b) केवल दो  
(c) सभी तीन  
(d) कोई नहीं

उत्तर: (d) कोई नहीं

### स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 गलत है:** यद्यपि मौर्योत्तर और प्रारंभिक मध्यकाल में 'निगम' शब्द व्यापारिक संघों या श्रेणियों को दर्शाता था, लेकिन इसका उपयोग विशेष रूप से केवल अंतर-क्षेत्रीय व्यापारियों के लिए ही नहीं किया जाता था। यह शब्द स्थानीय व्यापारिक समूहों, शिल्पकार संघों और कुछ क्षेत्रीय संदर्भों (जैसे दक्षिण भारतीय अभिलेखों में) में ब्राह्मणवादी बस्तियों के समूहों के लिए भी लागू होता था। इसके उपयोग को "केवल अंतर-क्षेत्रीय व्यापार व्यापारियों" तक सीमित करना एक अत्यधिक संकुचित व्याख्या है और इसलिए यह तथ्यगत रूप से गलत है।
- **कथन 2 गलत है:** गुप्त और बाद के अभिलेखों में 'पुण्य-शाला' (या पुण्यशाला) का तात्पर्य आम तौर पर धर्मार्थ हॉलों, यात्रियों के लिए विश्राम गृहों या दान-पुण्य (परोपकार) के स्थानों से है, जो अक्सर संन्यासियों को आश्रय देने या गरीबों को भोजन उपलब्ध कराने से जुड़े थे। ये विशेष रूप से "राज्य के खर्च पर आयोजित होने वाले धार्मिक अनुष्ठान केंद्र" नहीं थे। धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ, पूजा) आमतौर पर मंदिरों या विशिष्ट अग्रहारों और धर्मशालाओं में किए जाते थे, पुण्य-शालाओं में नहीं। इसके अलावा, ऐसे हॉलों में अनुष्ठान के प्रदर्शन पर सीधे खर्च करने के बजाय राज्य का योगदान अक्सर अप्रत्यक्ष (भूमि अनुदान, कर छूट) होता था।
- अतः, दोनों कथन गलत हैं → विकल्प (d)।

**प्रश्न 2. निम्नलिखित कथन दिया गया है:**

निम्नलिखित में से कौन सी एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो एक साथ:

- (i) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत सूचीबद्ध है;
- (ii) IUCN द्वारा "लुप्तप्राय" (Endangered) के रूप में प्रमाणित है; और
- (iii) भारत के केवल एक ही जैव-भौगोलिक क्षेत्र (single bio-geographical zone) तक सीमित है:

(a) लायन-टेल्ड मैकाक (Lion-tailed macaque)

(b) ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (Great Indian bustard)

(c) हिमालयी बटेर (Himalayan quail)

(d) नारकोंडम हॉर्नबिल (Narcondam hornbill)

**उत्तर:** (c) हिमालयी बटेर (Himalayan quail)

**स्पष्टीकरण:**

यह एक तथ्यात्मक रूप से घुमावदार प्रश्न है जो वैधानिक स्थिति (WPA), IUCN स्थिति और जैव-भौगोलिक प्रतिबंध के सटीक मिलान की मांग करता है।

- **लायन-टेल्ड मैकाक:**

- WPA: अनुसूची I – सही।
- IUCN: लुप्तप्राय (Endangered) – सही।
- जैव-भूगोल: पश्चिमी घाट तक सीमित (केवल एक क्षेत्र) – सही।
- *नोट:* यह तीनों शर्तों को पूरा करता है। लेकिन प्रश्न "एकमात्र प्रजाति" के बारे में पूछता है। हमें यह जांचना होगा कि क्या अन्य भी इसे पूरा करते हैं।

- **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड:**

- WPA: अनुसूची I – सही।
- IUCN: गंभीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered - न कि Endangered) – इसलिए शर्त (ii) विफल हो जाती है।

- जैव-भूगोल: ऐतिहासिक रूप से राजस्थान और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों (मरुस्थल और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों) में, इसलिए वर्तमान में यह सख्ती से केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है।
- अतः यह मेल नहीं खाता।

• **हिमालयी बटेर:**

- WPA: अनुसूची I – सही।
- IUCN: गंभीर रूप से लुप्तप्राय / Critically Endangered (कुछ आकलनों में इसे 'संभावित रूप से विलुप्त' माना जाता है, लेकिन यह अभी भी अत्यधिक खतरे वाली "Endangered/Critically Endangered" श्रेणी में है)। यूपीएससी-स्तर के तर्क के लिए, इसे व्यापक रूप से उच्च जोखिम के अर्थ में स्वीकार किया जाता है।
- जैव-भूगोल: विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी हिमालय) तक सीमित है, यानी एक एकल जैव-भौगोलिक क्षेत्र।
- अतः यह तीनों को पूरा करता है।

• **नारकोंडम हॉर्नबिल:**

- WPA: अनुसूची I – सही।
- IUCN: गंभीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered) – शब्दों के अनुसार सख्ती से "Endangered" नहीं।
- जैव-भूगोल: नारकोंडम द्वीप तक सीमित है, जो उत्तर पूर्वी द्वीप क्षेत्र के अंतर्गत आता है – एक एकल क्षेत्र।
- हालांकि, IUCN स्थिति गंभीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered) होने के कारण, यह प्रश्न के शब्दों के सख्त अर्थ में हिमालयी बटेर की तुलना में कम सटीक बैठता है।

**रणनीति और निष्कर्ष:** इस तरह के घुमावदार प्रश्नों में परीक्षक की मंशा को समझना होता है। यहाँ 'हिमालयी बटेर' (Himalayan quail) सबसे उपयुक्त उत्तर है क्योंकि यह इस सूची में एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो कानूनी रूप से अनुसूची I के तहत संरक्षित है, आधिकारिक तौर पर उच्चतम खतरे की श्रेणी में मानी जाती है, और ऐतिहासिक रूप से केवल एक संकीर्ण रूप से परिभाषित हिमालयी इलाके से जानी जाती है, जो इसे भौगोलिक रूप से सबसे अधिक सीमित बनाती है।

- अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।

**प्रश्न 3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. बजट घाटे (budget deficit) का तात्पर्य है कि सरकार का कुल व्यय उसके कुल राजस्व से अधिक है, जिसमें ऋण (उधार) भी शामिल है।
2. किसी दिए गए वित्तीय वर्ष में राजकोषीय घाटा (fiscal deficit) हमेशा प्राथमिक घाटे (primary deficit) से बड़ा होता है, बशर्ते ब्याज भुगतान सकारात्मक (positive) हो।
3. यदि राजस्व घाटा शून्य है, तो इसका तात्पर्य है कि सरकार उस वर्ष के दौरान किसी भी उद्देश्य के लिए उधार नहीं ले रही है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक  
(b) केवल दो  
(c) सभी तीन  
(d) कोई नहीं

उत्तर: (a) केवल एक

स्पष्टीकरण:

- कथन 1: गलत है।

भारतीय समष्टि-राजकोषीय (macro-fiscal) शब्दावली में 'बजट घाटा' शब्द का प्रयोग हाल के केंद्रीय बजट दस्तावेजों में एक मानक शब्द के रूप में नहीं किया जाता है। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द निम्नलिखित हैं:

- **राजकोषीय घाटा (Fiscal deficit):** कुल व्यय ऋण (राजस्व + गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियां)।
- **राजस्व घाटा (Revenue deficit):** राजस्व व्यय ऋण राजस्व प्राप्तियां।
- **प्राथमिक घाटा (Primary deficit):** राजकोषीय घाटा ऋण ब्याज भुगतान।

यदि "बजट घाटे" की व्याख्या इस प्रकार की जाए कि "कुल व्यय उधार सहित कुल राजस्व से अधिक है," तो यह वास्तव में राजकोषीय घाटे की परिभाषा है, न कि किसी अलग 'बजट घाटे' की अवधारणा की। इसके अलावा, परिभाषा के अनुसार, व्यय में हमेशा वित्तपोषण पक्ष के हिस्से के रूप में उधार शामिल होते हैं; घाटा वह अंतर है जिसे उधार लेकर भरने की आवश्यकता होती है। इसलिए यह शब्दावली वैचारिक रूप से भ्रमित करने वाली है और मानक परिभाषाओं से मेल नहीं खाती। अतः कथन 1 गलत है।

- कथन 2: सही है।

{राजकोषीय घाटा} = {प्राथमिक घाटा} + {ब्याज भुगतान}

यदि ब्याज भुगतान सकारात्मक हैं (जो कि सामान्य वर्षों में हमेशा होते हैं), तो:

{राजकोषीय घाटा} {प्राथमिक घाटा}

इस प्रकार, जब ब्याज भुगतान  $\$ > 0\$$  हो, तो राजकोषीय घाटा हमेशा प्राथमिक घाटे से बड़ा होता है। अतः कथन 2 सही है।

• **कथन 3: गलत है।**

{राजस्व घाटा} = {राजस्व व्यय} - {राजस्व प्राप्तियां}

यदि राजस्व घाटा शून्य है, तो इसका अर्थ है कि राजस्व व्यय = राजस्व प्राप्तियां।

लेकिन सरकार का राजकोषीय घाटा अभी भी पूंजीगत व्यय (capital expenditure) के कारण हो सकता है, जिसे उधार द्वारा वित्तपोषित किया जाता है। उधार पूंजी निर्माण (सड़क, संयंत्र आदि) के लिए लिया जा सकता है, भले ही राजस्व घाटा शून्य हो। इसलिए शून्य राजस्व घाटे का यह अर्थ नहीं है कि सरकार उधार नहीं ले रही है। अतः कथन 3 गलत है।

• **अतः केवल कथन 2 सही है → विकल्प (a)।**

**प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) किसी निजी व्यक्ति के खिलाफ उत्प्रेषण लेख (writ of certiorari) जारी कर सकता है यदि वह व्यक्ति सार्वजनिक क्षमता (public capacity) में कार्य कर रहा हो।
2. किसी निजी निकाय के खिलाफ परमादेश लेख (writ of mandamus) जारी नहीं किया जा सकता है, भले ही वह किसी कानून (statute) के तहत सार्वजनिक कर्तव्य का निर्वहन कर रहा हो।
3. रिट जारी करने के मामले में उच्च न्यायालयों (High Courts) का क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार (territorial jurisdiction) सर्वोच्च न्यायालय की तुलना में व्यापक है।
4. सर्वोच्च न्यायालय वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार से संबंधित मामलों में प्रतिषेध लेख (writ of prohibition) जारी नहीं कर सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

• **कथन 1: सही है (एक सूक्ष्म अर्थ में)।**

अनुच्छेद 32 के तहत, सर्वोच्च न्यायालय निम्नलिखित के खिलाफ रिट जारी कर सकता है:

- राज्य,
- राज्य के अधीन प्राधिकारी, और
- कुछ मामलों में, निजी निकायों या व्यक्तियों के खिलाफ भी जब वे सार्वजनिक कार्य कर रहे हों या सार्वजनिक क्षमता में कार्य कर रहे हों (जैसे, कानून द्वारा शासित निजी विश्वविद्यालय, वैधानिक कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले निकाय)।

इसलिए, यदि कोई निजी व्यक्ति सार्वजनिक क्षमता में कार्य कर रहा है (सार्वजनिक कर्तव्य का पालन कर रहा है), तो न्यायालय एक अवैध आदेश को रद्द करने के लिए उत्प्रेषण (certiorari) जारी कर सकता है। अतः कथन 1 सही है।

• **कथन 2: गलत है।**

परमादेश ("हम आदेश देते हैं") निम्नलिखित के खिलाफ जारी किया जा सकता है:

- सार्वजनिक अधिकारी, और
- निजी निकाय जब वे किसी कानून के तहत सार्वजनिक कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हों।

यदि कोई निजी निकाय सार्वजनिक कार्य करने के लिए वैधानिक रूप से बाध्य है और विफल रहता है, तो न्यायालय परमादेश जारी कर सकता है। इसलिए यह कथन कि "यह किसी निजी निकाय के खिलाफ जारी नहीं किया जा सकता है, भले ही वह किसी कानून के तहत सार्वजनिक कर्तव्य का निर्वहन कर रहा हो" गलत है।

• **कथन 3: सही है।**

- **सर्वोच्च न्यायालय (अनुच्छेद 32):** रिट केवल भारत के भीतर के प्राधिकारियों के खिलाफ जारी की जा सकती है, लेकिन इसका क्षेत्रीय दायरा उन मामलों तक सीमित है जहाँ कार्रवाई का कारण (cause of action) भारत में कहीं भी उत्पन्न होता है; हालाँकि, न्यायालय आम तौर पर राष्ट्रीय महत्व के मामलों में कार्य करता है।
- **उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 226):** इनका क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार व्यापक है; वे रिट जारी कर सकते हैं:
  - अपनी क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर, और

- कुछ मामलों में, अपनी सीमाओं से परे भी, यदि कार्रवाई का कारण आंशिक रूप से उनके क्षेत्र के भीतर उत्पन्न होता है।

व्यवहार में, स्थानीय प्रशासन के संबंध में रिट के लिए उच्च न्यायालयों के पास व्यापक क्षेत्रीय लचीलापन होता है। इस प्रकार, कथन 3 को सही माना जाता है।

• **कथन 4: गलत है।**

प्रतिषेध (Prohibition) एक निचली अदालत या न्यायाधिकरण (tribunal) को निर्देशित एक रिट है ताकि उसे किसी ऐसे मामले में आगे बढ़ने से रोका जा सके जहां उसके पास क्षेत्राधिकार की कमी है या वह कानून का उल्लंघन कर रहा है। सर्वोच्च न्यायालय किसी भी ऐसे मामले में प्रतिषेध जारी कर सकता है जहां मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होता है, जिसमें वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19) शामिल है। इस पर कोई संवैधानिक रोक नहीं है। अतः कथन 4 गलत है।

• **सही कथन: 1 और 3 → दो कथन → विकल्प (b)।**

**प्रश्न 5. कथन और कारण (Assertion – Reason) प्रकार:**

- कथन (A):** शीतोष्ण वनस्पति (Temperate vegetation) की विशेषता मध्यम ऊंचाई के वन हैं जिनमें ओक (बांज), बीच और पाइन (चीड़) जैसी प्रमुख प्रजातियां पाई जाती हैं, और यह मध्यम वर्षा तथा मौसमी तापमान भिन्नता वाले क्षेत्रों में पाई जाती है।
- कारण (R1):** शीतोष्ण क्षेत्रों में मध्यम वर्षा होती है और स्पष्ट मौसमी परिवर्तन होते हैं, जो घने सदाबहार वर्षावनों के बजाय पर्णपाती (deciduous) और मिश्रित वन प्रकारों के विकास के अनुकूल होते हैं।
- कारण (R2):** उष्णकटिबंधीय वनस्पति (Tropical vegetation) में ऊंचे सदाबहार पेड़ों की प्रधानता होती है क्योंकि पूरे वर्ष उच्च और निरंतर वर्षा, निरंतर उच्च तापमान के साथ मिलकर, निर्बाध विकास और घने वितान (canopy) के निर्माण का समर्थन करती है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

- (a) R1 और R2 दोनों सत्य हैं, और दोनों A की सही व्याख्या करते हैं।
- (b) R1 और R2 दोनों सत्य हैं, लेकिन केवल R1 ही A की सही व्याख्या करता है।
- (c) R1 सत्य है, लेकिन R2 असत्य है।
- (d) R1 असत्य है, लेकिन R2 सत्य है।

**उत्तर:** (b) R1 und R2 दोनों सत्य हैं, लेकिन केवल R1 ही A की सही व्याख्या करता है।

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन (A)** शीतोष्ण वनस्पति का वर्णन करता है: मध्यम ऊंचाई के वन, ओक, बीच, पाइन जैसी प्रजातियां, मध्यम वर्षा और मौसमी तापमान भिन्नता। यह पूरी तरह से सही है।
- **कारण 1 (R1):**

यह बताता है कि शीतोष्ण क्षेत्रों में मध्यम वर्षा और स्पष्ट मौसम होते हैं, जो घने सदाबहार वर्षावनों के बजाय पर्णपाती और मिश्रित वनों के अनुकूल होते हैं। यह सत्य है और सीधे तौर पर यह समझाता है कि शीतोष्ण वनस्पति में A में उल्लिखित विशेषताएं (मध्यम ऊंचाई, मिश्रित/पर्णपाती प्रजातियां) क्यों पाई जाती हैं। इसलिए R1 सत्य है और A की सही व्याख्या करता है।

- **कारण 2 (R2):**

यह बताता है कि उष्णकटिबंधीय वनस्पति में उच्च, निरंतर वर्षा और निरंतर उच्च तापमान के कारण ऊंचे सदाबहार पेड़ों का प्रभुत्व होता है, जिससे निर्बाध विकास और घना वितान (कैनोपी) बनता है। उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के सामान्य विवरण के रूप में यह भी सत्य है।

हालाँकि, R2 उष्णकटिबंधीय वनस्पति की व्याख्या करता है, शीतोष्ण वनस्पति की नहीं। कथन (A) शीतोष्ण वनस्पति के बारे में है; R2, सत्य होने के बावजूद, A की व्याख्या नहीं करता है। यह एक अलग घटना (उष्णकटिबंधीय बनाम शीतोष्ण विपरीतता) की व्याख्या करता है, न कि स्वयं शीतोष्ण वनस्पति की विशेषताओं की।

**निष्कर्ष:**

- R1: सत्य है और A की व्याख्या करता है।
- R2: सत्य है लेकिन A की व्याख्या नहीं करता है।
- **अतः विकल्प (b) सही है।**

**प्रश्न 1. भारतीय पासपोर्ट (Indian Passport) की कानूनी स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

- **कथन-I:** भारतीय घरेलू कानून में, भारतीय पासपोर्ट का स्वामित्व (Possession) भारतीय नागरिकता का निर्णायक या पूर्ण प्रमाण नहीं माना जाता है।
- **कथन-II:** पासपोर्ट अधिनियम, 1967 के प्रावधानों के तहत, केंद्र सरकार के पास विवेकाधीन अधिकार है कि यदि वह लोक हित में आवश्यक समझे, तो किसी ऐसे व्यक्ति को भी पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेज जारी कर सकती है जो भारत का नागरिक नहीं है।

उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।
- (b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन-I सही है लेकिन कथन-II गलत है।
- (d) कथन-I गलत है लेकिन कथन-II सही है।

**उत्तर:** (a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।

**स्पष्टीकरण:**

विदेश मंत्रालय (MEA) और विभिन्न उच्च न्यायालयों ने लगातार यह माना है कि भारतीय पासपोर्ट बुनियादी रूप से एक यात्रा दस्तावेज (travel document) है जो अंतर्राष्ट्रीय पारगमन को सक्षम बनाता है और यह घरेलू नागरिक कानूनों के तहत नागरिकता के अकाट्य या निर्णायक प्रमाण के रूप में कार्य नहीं करता है। पासपोर्ट अधिनियम, 1967 की धारा 20 के तहत, केंद्र सरकार को विशिष्ट और अनिवार्य सार्वजनिक हित की स्थितियों में उन व्यक्तियों को भी पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेज जारी करने की विवेकाधीन शक्ति प्रदान की गई है जो भारत के नागरिक नहीं हैं। चूंकि इन वैधानिक शर्तों के तहत एक गैर-नागरिक को भी कानूनी रूप से भारतीय पासपोर्ट दिया जा सकता है, इसलिए केवल इस दस्तावेज के होने को नागरिकता का पूर्ण या अचूक प्रमाण नहीं माना जा सकता है। इसलिए, कथन-II सही है और यह कथन-I के लिए प्रत्यक्ष तार्किक स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

**प्रश्न 2. प्राचीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, "सुश्रुत संहिता" (Sushruta Samhita) मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस मील के पत्थर के लिए प्रसिद्ध है?**

- (a) मिट्टी की नमी और वर्षा जल प्रतिधारण के आधार पर कृषि भूमियों का औपचारिक वर्गीकरण।

(b) राइनोप्लास्टी (नाक का पुनर्निर्माण), पुनर्निर्माण सर्जरी (reconstructive surgery) में अग्रणी तकनीकें और शल्य चिकित्सा उपकरणों का व्यवस्थित विवरण।

(c) मौर्य साम्राज्य के तहत शासन कला, राजनयिक जासूसी और समुद्री व्यापार शुल्क का संहिताबद्धीकरण।

(d) गोलाकार ज्यामिति (spherical geometry) की सबसे प्रारंभिक अवधारणा का विवरण देने वाला एक आधारभूत गणितीय ग्रंथ।

**उत्तर:** (b) राइनोप्लास्टी, पुनर्निर्माण सर्जरी में अग्रणी तकनीकें और शल्य चिकित्सा उपकरणों का व्यवस्थित विवरण।

**स्पष्टीकरण:**

'सुश्रुत संहिता' प्राचीन संस्कृत चिकित्सा ग्रंथ है जिसके रचयिता महर्षि सुश्रुत हैं, जिन्हें वैश्विक स्तर पर "प्लास्टिक सर्जरी के जनक" के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह ग्रंथ राइनोप्लास्टी (नाक का पुनर्निर्माण), मोतियाबिंद का ऑपरेशन और जटिल लिथोटॉमी (पथरी निकालने की सर्जरी) सहित उन्नत शल्य चिकित्सा पद्धतियों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करके चिकित्सा के इतिहास में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर स्थापित करता है। इसके अलावा, यह 120 से अधिक शल्य चिकित्सा उपकरणों को सूचीबद्ध करने के साथ-साथ ऑपरेशन से पहले और बाद की देखभाल पर विस्तृत दिशानिर्देश देता है, जो इसे हर्बल या आंतरिक चिकित्सा पर केंद्रित समकालीन प्राचीन कार्यों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

**प्रश्न 3. भारत में नव-शुरू किए गए "सेवा उत्पादन सूचकांक" (Index of Services Production - ISP) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. औपचारिक सेवा क्षेत्र के वास्तविक उत्पादन में अल्पकालिक परिवर्तनों को मापने के लिए सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) द्वारा मासिक आधार पर ISP का संकलन किया जाता है।
2. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP), जो अपने आधार वर्ष के रूप में 2011-12 का उपयोग करता है, के विपरीत ISP को 2024-25 आधार वर्ष के साथ डिजाइन किया गया है।
3. यह सूचकांक लोक प्रशासन, रक्षा और अनौपचारिक बाजार सेवाओं सहित संपूर्ण भारतीय सेवा क्षेत्र को शामिल करता है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 और 2 सही हैं:** सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) एक अल्पकालिक आर्थिक संकेतक है जिसे MoSPI द्वारा मासिक रूप से संकलित किया जाता है ताकि औपचारिक व संगठित सेवा क्षेत्र में उत्पादन की मात्रा के रुझानों को ट्रैक किया जा सके। इसमें 2024-25 का अद्यतन आधार वर्ष शामिल किया गया है, जो इसकी संरचनात्मक आधार रेखा को औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुराने 2011-12 के आधार वर्ष से अलग करता है।
- **कथन 3 गलत है:** यह सूचकांक संपूर्ण सेवा पारिस्थितिकी तंत्र का संपूर्ण कवरेज प्रदान नहीं करता है; यह जानबूझकर उन क्षेत्रों को बाहर रखता है जहां वास्तविक मासिक उत्पादन को गतिशील रूप से मापना कठिन होता है, जैसे कि लोक प्रशासन, रक्षा, अनौपचारिक/गैर-निगमित उद्यम, आवासों का स्वामित्व और विशिष्ट वित्तीय सेवाएं।

**प्रश्न 4. लिपुलेख दर्रे (Lipulekh Pass) के भौगोलिक और रणनीतिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. यह भारत के उत्तराखंड राज्य, चीन के तिब्बत क्षेत्र और नेपाल के बीच की सीमा पर स्थित एक त्रि-जंक्शन (tri-junction) पर्वतीय दर्रा है।
2. यह दर्रा वार्षिक कैलाश मानसरोवर यात्रा तीर्थयात्रा के लिए एक प्रमुख पारगमन मार्ग (transit route) है।
3. कालापानी क्षेत्र, जो इस दर्रे के निकट स्थित है, भारत और भूटान के बीच सक्रिय सीमा विवाद का विषय है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 और 2 सही हैं:** लिपुलेख दर्रा हिमालय में स्थित एक अत्यधिक रणनीतिक पर्वतीय दर्रा है जो भारत के उत्तराखंड राज्य, चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और नेपाल संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य को जोड़ने वाले त्रि-जंक्शन बिंदु पर स्थित है। यह एक ऐतिहासिक सीमा पार व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता है और भारत सरकार द्वारा आयोजित की जाने वाली वार्षिक कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए प्रमुखता से उपयोग किया जाता है।
- **कथन 3 गलत है:** इसके निकटवर्ती कालापानी क्षेत्र को लेकर क्षेत्रीय विवाद भारत और नेपाल के बीच एक सक्रिय सीमा मुद्दा है (जो 1816 की सुगौली संधि की अलग-अलग व्याख्याओं से उत्पन्न हुआ है), न कि भूटान के साथ।

प्रश्न 5. भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए "भारती कार्यक्रम" (The BHARATI Programme) के संदर्भ में,

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख निर्यात त्वरण पहल है।
2. यह कार्यक्रम 2030 तक कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात में 50 बिलियन अमरीकी डालर प्राप्त करने के भारत के लक्ष्य के अनुरूप एक निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना चाहता है।
3. यह विशेष रूप से उन स्टार्टअप्स और नवप्रवर्तकों को बढ़ावा देता है जो स्वच्छता और पादप-स्वच्छता (Sanitary and Phytosanitary - SPS) जोखिमों, ट्रेसिबिलिटी (उत्पाद के स्रोत की खोज) और स्मार्ट कृषि लॉजिस्टिक्स का समाधान करते हैं।
4. यह विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों और बड़े कॉर्पोरेट घरानों की सहायता करता है, जिससे व्यक्तिगत शोधकर्ताओं और लघु-स्तरीय एमएसएमई (MSMEs) को इसके इनक्यूबेशन समूह से बाहर रखा गया है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) केवल चार

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 2 और 3 सही हैं:** भारती (BHARATI) कार्यक्रम का मुख्य ध्यान 2030 तक कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात में 50 बिलियन डॉलर के मील के पत्थर तक पहुँचने के लिए भारत के कृषि-निर्यात को बढ़ाना है। यह एक इनक्यूबेशन और सहायता कार्यक्रम के रूप में कार्य करता है जो उन स्टार्टअप्स को प्राथमिकता देता है जो निर्यात की बाधाओं के लिए तकनीकी समाधान विकसित करते हैं, जैसे कि सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी (SPS) मानकों का प्रबंधन, खाद्य ट्रेसबिलिटी में सुधार करना और स्मार्ट आपूर्ति श्रृंखला (supply chain) बनाना।
- **कथन 1 गलत है:** APEDA वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत काम करने वाला एक वैधानिक निकाय है, न कि कृषि मंत्रालय के तहत।
- **कथन 4 गलत है:** यह पहल विशेष रूप से शुरुआती चरण के इनोवेटर्स, व्यक्तिगत शोधकर्ताओं और एमएसएमई (MSMEs) को सक्रिय रूप से सहायता देकर निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र का लोकतांत्रिकीकरण करने के लिए डिज़ाइन की गई है, न कि केवल बड़े कॉर्पोरेट घरानों को विशेष सहायता देने के लिए।

**प्रश्न 6. लक्षद्वीप द्वीपसमूह के भूगोल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. नौ डिग्री चैनल (Nine Degree Channel) मिनिक्कॉय द्वीप को मुख्य लक्षद्वीप द्वीपसमूह से अलग करता है।
2. पिट्टी द्वीप (Pitti Island), जो निर्जन है और जहां एक समृद्ध पक्षी अभयारण्य है, में कोई मानवीय बस्ती नहीं है और यह एक घोषित संरक्षित क्षेत्र है।
3. अमीनदीवी द्वीप समूह कन्नानोर (Cannanore) द्वीपों के दक्षिण में स्थित है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a) केवल 1 और 2

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 और 2 सही हैं:** नौ डिग्री चैनल एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है जो भौगोलिक रूप से सबसे दक्षिणी और सांस्कृतिक रूप से भिन्न मिनिक्ॉय द्वीप को लक्कादीव/लक्षद्वीप के मुख्य केंद्रीय द्वीप समूह से अलग करता है। पिट्टी द्वीप इस क्षेत्र के भीतर एक छोटा सा रेत का टीला (sandbank) है जहां कोई स्थायी मानव निवास नहीं है और इसे सोइटी टर्न (sooty tern) जैसे समुद्री पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण वन्यजीव आश्रय और पक्षी अभयारण्य के रूप में कानूनी रूप से संरक्षित घोषित किया गया है।
- **कथन 3 गलत है:** अमीनदीवी द्वीप समूह (जिसमें अमिनी, कदमत, किल्टन और चेतलाट जैसे द्वीप शामिल हैं) लक्षद्वीप द्वीपसमूह के सबसे उत्तरी भाग का निर्माण करता है, जो उन्हें केंद्रीय कन्नानोर (लक्कादीव) द्वीप समूह के उत्तर में स्थित करता है, न कि दक्षिण में।

SIXSIGMA IAS  
Dream | Dare | Deliver

## दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

(GS-1: इतिहास / कला और संस्कृति)

**कक्षा:** 12वीं NCERT: भारतीय इतिहास के कुछ विषय - भाग I (अध्याय 4: "विचारक, विश्वास और इमारतें - सांस्कृतिक विकास")

**प्रश्न 1.** "प्राचीन भारत के स्तूप न केवल पत्थर और ईंट के स्थापत्य चमत्कार थे, बल्कि बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान (cosmology), दर्शन और सामाजिक-धार्मिक संरक्षण की दृश्य अभिव्यक्ति भी थे।" सांची के महान स्तूप के संरचनात्मक विकास, प्रतीकवाद और वित्तीय व्यवस्था (संरक्षण) के विशेष संदर्भ में इस कथन की सविस्तार व्याख्या कीजिए।

## आदर्श उत्तर:

प्राचीन भारत के स्तूप, जो साधारण मिट्टी के शवाधान टीलों (चैत्यों) से विकसित होकर विशाल पत्थर की संरचनाओं में परिवर्तित हुए, प्रारंभिक बौद्ध कला और वास्तुकला के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये केवल पूजा की निष्क्रिय संरचनाएं नहीं थे, बल्कि सामाजिक-धार्मिक एकीकरण के गतिशील साधन और बौद्ध तत्वमीमांसा (metaphysics) के दृश्य प्रतिनिधित्व के रूप में कार्य करते थे।

## ब्रह्मांडीय और दार्शनिक प्रतीकवाद

- **अंड (The Anda):** स्तूप का विशाल अर्धगोलाकार गुंबद ब्रह्मांडीय अंडे (ब्रह्मांड) और स्वर्ग के गुंबद का प्रतिनिधित्व करता है। यह ब्रह्मांड की अनंत प्रकृति और निर्वाण (मुक्ति) की अंतिम अवस्था का प्रतीक है।
- **हर्मिका (The Harmika):** अंड के ऊपर स्थित, यह चौकोर रेलिंगदार छज्जा पवित्र बाड़े या तैंतीस देवताओं के स्वर्ग (त्रायस्त्रिंश) का प्रतिनिधित्व करता है। यह दैवीय निवास स्थान है।
- **यष्टि और छत्र (The Yashti and Chatra):** हर्मिका से ऊपर की ओर निकलता हुआ एक केंद्रीय अक्षीय स्तंभ (यष्टि) है जो ब्रह्मांडीय धुरी (axis mundi) का प्रतीक है जो स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ता है। पत्थर की छतरी (छत्र) के तीन स्तर बौद्ध धर्म के त्रिरत्न को दर्शाते हैं: बुद्ध (शिक्षक), धम्म (सिद्धांत), और संघ (संगठन)।
- **प्रदक्षिणा पथ (The Pradakshina Patha):** आधार और ऊपरी स्तरों पर बने गोलाकार मार्ग जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र (संसार) का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्तूप के चारों ओर दक्षिणावर्त (clockwise) दिशा में परिक्रमा करके, श्रद्धालु रूपक के तौर पर खुद को बुद्ध की शिक्षाओं के ब्रह्मांडीय मार्ग के अनुकूल संरेखित करते हैं।

## सामाजिक-धार्मिक संरक्षण और वित्तपोषण

सांची स्तूप का निर्माण और विस्तार एक अत्यधिक विकेंद्रीकृत, लोकतांत्रिक वित्तपोषण मॉडल को उजागर करता है जिसे दान (सामूहिक संरक्षण) के रूप में जाना जाना जाता है:

- **शाही संरक्षण (Royal Patronage):** यद्यपि सम्राट अशोक ने सांची की ईंटों की नींव रखी थी, लेकिन बाद के राजवंशों जैसे शुंग और सातवाहनों ने इसके पत्थर के आवरण और विशाल द्वारों (तोरणों) को वित्तपोषित किया। उदाहरण के लिए, दक्षिणी तोरण द्वार पर एक शिलालेख राजा सातकर्णी के शासनकाल में विदिशा के हाथीदांत के कारीगरों की श्रेणी (गिल्ड) द्वारा किए गए दान को दर्ज करता है।
- **सामूहिक और व्यक्तिगत आम लोगों के दान (Collective and Individual Lay Donations):** रेलिंग और स्तंभों पर बने शिलालेख सैकड़ों आम नागरिकों के योगदान को दर्ज करते हैं—जिनमें भिक्षु (bhikhus), भिक्षुणियां (bhikhunis), व्यापारी (setthis), गृहपति (gahapatis) और शिल्पकार शामिल हैं। इस सामूहिक भागीदारी ने कला निर्माण का लोकतंत्रीकरण किया, जिससे स्तूप एक वास्तविक सामुदायिक स्मारक बन गया।

## निष्कर्ष

इसलिए, सांची का महान स्तूप सांसारिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच एक स्थापत्य सेतु है। अपनी संरचनात्मक ज्यामिति के माध्यम से, यह ज्ञानोदय (मोक्ष) के मार्ग को दृश्यमान बनाता है, जबकि इसके विविध संरक्षक यह दर्शाते हैं कि कैसे बौद्ध संघ के लोकतांत्रिक लोकाचार ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों को एक एकल आध्यात्मिक समुदाय में एकीकृत किया।

## (GS-2: राजव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

**कक्षा:** 12वीं NCERT: समकालीन विश्व राजनीति (अध्याय 4: "सत्ता के वैकल्पिक केंद्र")

**प्रश्न 2.** "यूरोपीय संघ (EU) का एक आर्थिक संघ से उत्तरोत्तर एक राजनीतिक, विनियामक और सुरक्षा-उन्मुख इकाई के रूप में संक्रमण ने इसके वैश्विक प्रभाव को बढ़ाया भी है और इसकी आंतरिक संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर भी किया है।" समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

### आदर्श उत्तर:

यूरोपीय संघ (EU) आधुनिक इतिहास में अतिराष्ट्रीय एकीकरण (supranational integration) के सबसे परिष्कृत प्रयोगों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। प्रारंभ में यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय (1951) तथा रोम की संधि (1957) के माध्यम से आर्थिक सहयोग के लिए एक तंत्र के रूप में कल्पित, ईयू लगातार एक शक्तिशाली भू-आर्थिक और राजनीतिक ब्लॉक के रूप में विकसित हुआ है।

### अर्थशास्त्र से परे विकास: सत्ता का एक वैकल्पिक केंद्र

- **अतिराष्ट्रीय शासन (Supranational Governance):** मास्ट्रिच संधि (1992) पर हस्ताक्षर के साथ, ईयू ने औपचारिक रूप से एक साझा विदेश और सुरक्षा नीति, एक एकल मुद्रा (यूरो) और संघ की नागरिकता की स्थापना की। लिस्बन संधि (2009) ने यूरोपीय परिषद के एक स्थायी अध्यक्ष और विदेश मामलों के एक उच्च प्रतिनिधि की शुरुआत करके इस राजनीतिक तंत्र को और अधिक सुव्यवस्थित किया।
- **"ब्रसेल्स प्रभाव" (The "Brussels Effect"):** यूरोपीय संघ वैश्विक स्तर पर अत्यधिक विनियामक (regulatory) प्रभाव रखता है। इसके विशाल एकल बाजार के कारण, वैश्विक निगमों को डेटा गोपनीयता (जैसे जीडीपीआर), पर्यावरण संरक्षण और एंटी-ट्रस्ट कानूनों पर कड़े यूरोपीय मानकों का पालन करना पड़ता है, जो प्रभावी रूप से यूरोपीय विनियमों को डिफॉल्ट वैश्विक मानक बना देता है।
- **संयुक्त रक्षा पहल (Joint Defense Initiatives):** जबकि नाटो (NATO) यूरोपीय रक्षा की आधारशिला बना हुआ है, ईयू ने सैन्य खरीद और संयुक्त संकट प्रतिक्रिया के समन्वय के लिए 'स्थायी संरचित सहयोग' (PESCO) जैसे स्वायत्त रक्षा तंत्र विकसित किए हैं।

## आंतरिक संरचनात्मक कमजोरियां और भू-राजनीतिक चुनौतियां

- **लोकतांत्रिक घाटा (The Democratic Deficit):** सत्ता यूरोपीय आयोग जैसे गैर-निर्वाचित निकायों में भारी रूप से केंद्रित है, जिससे जनता में अलगाव की भावना पैदा होती है। लोकतांत्रिक जवाबदेही की इस कथित कमी ने सदस्य देशों में राष्ट्रवादी, यूरो-संदेही (Euroskeptic) आंदोलनों को बढ़ावा दिया है, जैसा कि ब्रेक्सिट (Brexit) से प्रमाणित होता है।
- **संप्रभुता का टकराव (राष्ट्रीय बनाम अतिराष्ट्रीय) (Sovereignty Friction):** पश्चिमी सदस्य देशों (जो अधिक निकट एकीकरण पर जोर देते हैं) और पूर्वी देशों (जैसे हंगरी और पोलैंड) के बीच गहरे वैचारिक मतभेद हैं, जो न्यायिक स्वतंत्रता, अप्रवासन कोटा और एलजीबीटीक्यू+ (LGBTQ+) अधिकारों जैसे मुद्दों पर अपनी राष्ट्रीय संप्रभुता की कड़ाई से रक्षा करते हैं।
- **आर्थिक विषमता (Economic Asymmetry):** यूरोज़ोन यूरोपीय सेंट्रल बैंक द्वारा प्रबंधित एक एकल मौद्रिक नीति पर काम करता है, लेकिन इसमें एक केंद्रीकृत राजकोषीय नीति का अभाव है। यह संरचनात्मक असंतुलन यूरोज़ोन संप्रभु ऋण संकट के दौरान उजागर हुआ था, जहां अमीर उत्तरी यूरोपीय देशों ने ग्रीस जैसे कर्जदार दक्षिणी देशों पर कठोर तपस्या (austerity) की शर्तें थोपीं, जिससे गहरा राजनीतिक असंतोष पैदा हुआ।

## निष्कर्ष

यद्यपि यूरोपीय संघ ने एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था के लिए खुद को एक मजबूत भू-आर्थिक विकल्प के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित किया है, लेकिन इसकी दीर्घकालिक स्थिरता इसकी आंतरिक संरचनात्मक चुनौतियों के समाधान पर निर्भर करती है। प्रभावी बने रहने के लिए, ईयू को अतिराष्ट्रीय शासन और राष्ट्रीय संप्रभुता के बीच संतुलन बनाना होगा, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि इसकी आर्थिक शक्ति को लोकतांत्रिक वैधता का समर्थन प्राप्त हो।

## (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था और विकास)

**कक्षा:** 12वीं NCERT: भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास (अध्याय 4: "रोजगार: संवृद्धि, अनौपचारिकरण और अन्य मुद्दे")

**प्रश्न 3.** उदारीकरण के बाद के भारत में "रोजगारविहीन संवृद्धि" (jobless growth) और "श्रम बल के अनौपचारिकरण" (informalisation of the workforce) की परिघटनाओं पर चर्चा कीजिए। श्रम बाजार में इन प्रणालीगत चुनौतियों से निपटने के लिए किन संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है?

**आदर्श उत्तर:**

1991 के ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों के बाद से, भारत ने सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में प्रभावशाली वृद्धि हासिल की है और अक्सर सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल रहा है। हालांकि, इस आर्थिक विस्तार की विशेषता एक बड़ा संरचनात्मक विरोधाभास रही है: रोजगारविहीन संवृद्धि और श्रम बल का तीव्र अनौपचारिकरण।

### संरचनात्मक विरोधाभासों को समझना

- **रोजगारविहीन संवृद्धि (Jobless Growth):** यह तब होता है जब कोई अर्थव्यवस्था रोजगार के अवसरों में आनुपातिक वृद्धि के बिना मजबूत उत्पादन वृद्धि का अनुभव करती है। भारत में, जीडीपी विस्तार मुख्य रूप से श्रम-गहन विनिर्माण के बजाय पूंजी-गहन, उच्च-कौशल सेवा क्षेत्रों (जैसे आईटी, वित्त और दूरसंचार) के नेतृत्व में रहा है। नतीजतन, जहां उत्पादन में तेजी आई, वहीं बढ़ते क्षेत्रों की श्रम को खपाने की क्षमता सीमित रही।
- **श्रम बल का अनौपचारिकरण (Informalisation of the Workforce):** यह परिघटना उस स्थिति को संदर्भित करती है जहां कुल श्रम बल में अनौपचारिक श्रमिकों की हिस्सेदारी बढ़ती है, जबकि औपचारिक रोजगार अनुबंधों में गिरावट आती है। भारत का 90% से अधिक श्रम बल अनौपचारिक क्षेत्र में बना हुआ है, जिसमें सामाजिक सुरक्षा, सवैतनिक अवकाश, पेंशन लाभ और नौकरी की सुरक्षा का अभाव है। संगठित क्षेत्र के भीतर भी, व्यवसाय कड़े विनियामक अनुपालन से बचने के लिए अनुबंध (contract), आकस्मिक (casual) और गिग श्रम पर तेजी से निर्भर हो रहे हैं, जिससे रोजगार अनिश्चित हो गया है।

### अंतर्निहित कारण

- **अवरुद्ध विनिर्माण क्षेत्र (The Stunted Manufacturing Sector):** पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत, जिन्होंने कृषि से विनिर्माण और फिर सेवाओं में क्रमिक संक्रमण किया, भारत ने विनिर्माण चरण को छोड़ दिया। जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान लगभग 15-16% पर स्थिर रहा है, जिससे यह कृषि से पलायन करने वाले अतिरिक्त श्रम को समाहित करने में विफल रहा।
- **कौशल बेमेल (The Skills Mismatch):** आधुनिक, प्रौद्योगिकी-संचालित उद्योगों द्वारा आवश्यक कौशलों और घरेलू श्रम पूल की योग्यताओं के बीच एक बड़ा अंतर है। यह कौशल बेमेल लाखों विश्वविद्यालय स्नातकों को अल्प-रोजगार (underemployed) या बेरोजगार बना देता है।
- **प्रतिबंधात्मक श्रम कानून (Restrictive Labor Regulations):** ऐतिहासिक रूप से, जटिल श्रम कानूनों ने फर्मों को अपने स्थायी कार्यबल का विस्तार करने से हतोत्साहित किया, जिससे वे अनुबंध श्रम प्रणालियों को अपनाने के लिए मजबूर हुए।

### आवश्यक संरचनात्मक सुधार

- **श्रम-गहन विनिर्माण को बढ़ावा देना (Boosting Labor-Intensive Manufacturing):** कपड़ा, खाद्य प्रसंस्करण, चमड़ा और खेलौने जैसे उच्च रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्रों पर उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं जैसे लक्षित राजकोषीय प्रोत्साहन केंद्रित होने चाहिए।
- **आक्रामक कौशल विकास (Aggressive Skill Development):** माध्यमिक और उच्च शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण, शिक्षुता (apprentice) कार्यक्रमों और डिजिटल साक्षरता को एकीकृत करके शिक्षा प्रणाली को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप संरेखित किया जाना चाहिए।
- **गिग/अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करना (Strengthening Social Security for Gig/Informal Workers):** अनौपचारिक, अनुबंध और गिग-इकोनॉमी श्रमिकों के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना कवर और पेंशन योजनाएं प्रदान करने के लिए सामाजिक सुरक्षा संहिता (Social Security Code) का पूर्ण कार्यान्वयन आवश्यक है।

## निष्कर्ष

आर्थिक विकास तब तक टिकाऊ नहीं है जब तक कि इसके लाभ सभ्य, सुरक्षित रोजगार के माध्यम से व्यापक आबादी तक न पहुंचें। भारत को अपना नीतिगत ध्यान केवल जीडीपी के लक्ष्यों को हासिल करने से हटाकर श्रम-गहन विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित करना चाहिए, ताकि देश के जनसांख्यिकीय लाभांश (demographic dividend) का उत्पादक रूप से उपयोग किया जा सके, न कि इसे एक सामाजिक-आर्थिक चुनौती बनने दिया जाए।

## (GS-4: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि)

**विषय क्षेत्र:** लोक सेवा के बुनियादी मूल्य (वस्तुनिष्ठता, सत्यनिष्ठा, करुणा और नैतिक निर्णय लेना)

**प्रश्न 4.** "लोक प्रशासन में, सहानुभूति के बिना कठोर, वस्तुनिष्ठ नियमों का अनुप्रयोग प्रशासनिक क्रूरता का कारण बन सकता है; इसके विपरीत, प्रक्रियात्मक वस्तुनिष्ठता के बिना केवल सहानुभूति भ्रष्टाचार और व्यवस्था के पतन को जन्म दे सकती है।" एक लोक सेवक प्रक्रियात्मक वस्तुनिष्ठता और करुणामयी लोक सेवा के बीच स्पष्ट द्वंद्व को कैसे सुलझा सकता है?

### आदर्श उत्तर:

लोक प्रशासन में एक बुनियादी चुनौती नियमों के वस्तुनिष्ठ अनुपालन और जनता की मानवीय आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाना है। इस तनाव को अक्सर औपचारिकता (वेबेरियन तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही) और वास्तविक न्याय (नैतिक देखभाल का कर्तव्य) के बीच संघर्ष के रूप में देखा जाता है।

### चरम स्थितियों का खतरा

- **केवल वस्तुनिष्ठता का खतरा (बिना सहानुभूति के):** जब प्रशासक नियमों को जन कल्याण का साधन मानने के बजाय खुद में एक साध्य (end) मान लेते हैं, तो वे "प्रशिक्षित अक्षमता" (trained incapacity) या नौकरशाही लालफीताशाही के शिकार हो जाते हैं। यह कठोर दृष्टिकोण ऐसी स्थितियां पैदा कर सकता है जहां पहचान पत्र पर फिंगरप्रिंट न मिलने जैसी मामूली तकनीकी त्रुटियों के कारण कमजोर नागरिकों को महत्वपूर्ण कल्याणकारी लाभों से वंचित कर दिया जाता है। इसका परिणाम प्रशासनिक क्रूरता के रूप में सामने आता है।
- **केवल सहानुभूति का खतरा (बिना वस्तुनिष्ठता के):** दूसरी ओर, केवल करुणा के वशीभूत होकर स्थापित प्रोटोकॉल की अनदेखी करने से व्यक्तिगत पूर्वाग्रह, भाई-भतीजावाद और वित्तीय रिसाव (leakage) को बढ़ावा मिलता है। यदि व्यक्तिगत भावनात्मक आधारों पर नियमों में लगातार छूट दी जाती है, तो इससे कानून का शासन कमजोर होता है, संस्थागत सत्यनिष्ठा से समझौता होता है और भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं।

### द्वंद्व को सुलझाना: "सहानुभूतिपूर्ण वस्तुनिष्ठता" की अवधारणा

एक नैतिक लोक सेवक कई व्यावहारिक रणनीतियों के माध्यम से इस अंतर को पाट सकता है:

- **"रचनात्मक अनुपालन" का सिद्धांत (The Principle of "Creative Compliance"):** इसमें नियम के कठोर अक्षरों के बजाय कानून की मूल भावना की सेवा करने के लिए नियमों के भीतर लचीलेपन का उपयोग करना शामिल है। यदि किसी बेसहारा विधवा के पास पेंशन प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेज नहीं है, तो एक वस्तुनिष्ठ लेकिन सहानुभूति रखने वाला प्रशासक उसे वापस नहीं भेजेगा; इसके बजाय, वह कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वैकल्पिक सत्यापन प्रक्रियाओं के माध्यम से सक्रिय रूप से उसका मार्गदर्शन करेगा।
- **प्रशासनिक विवेक का नैतिक उपयोग (Utilizing Administrative Discretion Ethically):** लोक सेवा के अधिकांश नियम कुछ हद तक प्रशासनिक विवेक (discretion) की अनुमति देते हैं। एक सिविल सेवक को महात्मा गांधी के जंतर (Talisman) का उपयोग करके इस विवेक को निर्देशित करना चाहिए: यह विचार करना कि क्या प्रस्तावित कदम से सबसे गरीब और सबसे कमजोर व्यक्ति को गरिमा और अपने जीवन पर नियंत्रण वापस मिल सकेगा।
- **संरचनात्मक फीडबैक लूप (Structural Feedback Loops):** जब कोई नियम लगातार कमजोर लोगों को परेशानी में डालता है, तो एक नैतिक प्रशासक का यह कर्तव्य (सत्यनिष्ठा) बनता है कि वह इन व्यवस्थागत विसंगतियों को दर्ज करे और उच्च अधिकारियों को नीतिगत सुधारों की सिफारिश करे।

### निष्कर्ष

प्रक्रियात्मक वस्तुनिष्ठता और करुणा एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं; वे एक-दूसरे के पूरक हैं। वस्तुनिष्ठता वह संरचनात्मक रीढ़ प्रदान करती है जो प्रशासनिक निष्पक्षता सुनिश्चित करती है, जबकि करुणा लोक सेवा के पीछे प्रेरक

उद्देश्य प्रदान करती है। आदर्श लोक सेवक एक "सहानुभूतिपूर्ण पेशेवर" होता है जो सबसे कमजोर लोगों को न्याय और गरिमा प्रदान करने के लिए नियमों की स्थिरता को एक उपकरण के रूप में उपयोग करता है।

**(सामयिकी / करंट अफेयर्स: अर्थव्यवस्था / प्रौद्योगिकी)**

**पाठ्यक्रम विषय:** GS-3 (भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोजगार से संबंधित विषय; प्रौद्योगिकी विकास)

**प्रश्न 5.** भारत के व्यापक आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) सांख्यिकीय ढांचे में डेटा अंतरालों (data gaps) को पाटने में नए पेश किए गए "सेवा उत्पादन सूचकांक (Index of Services Production - ISP)" के महत्व का आकलन कीजिए। यह उच्च-आवृत्ति संकेतक (high-frequency indicator) पारंपरिक औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (Index of Industrial Production - IIP) की तुलना में साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण को कैसे बढ़ाएगा?

**आदर्श उत्तर:**

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने 2024-25 को अपना आधार वर्ष मानते हुए सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) शुरू करने की घोषणा की है, जो भारत के व्यापक आर्थिक सांख्यिकीय ढांचे में एक बड़ी प्रगति है। ऐतिहासिक रूप से, भारत की उच्च-आवृत्ति आर्थिक ट्रैकिंग औद्योगिक उत्पादन की ओर अत्यधिक झुकी हुई थी, जिससे सेवा क्षेत्र—जो देश की जीडीपी का मुख्य इंजन है—की निगरानी में एक महत्वपूर्ण डेटा अंतराल बना हुआ था।

**डेटा अंतरालों को पाटने में ISP का महत्व**

- **प्रमुख जीडीपी योगदानकर्ता को शामिल करना:** सेवा क्षेत्र भारत के सकल मूल्य वर्धित (GVA) में 53% से अधिक का योगदान देता है। इसके प्रभुत्व के बावजूद, नीति निर्माताओं के पास पहले इसके उत्पादन की गतिशीलता को ट्रैक करने के लिए कोई मासिक, वास्तविक समय का संकेतक नहीं था, और वे इसके बजाय देरी से मिलने वाले त्रैमासिक जीवीए डेटा या यात्री यातायात तथा बैंक क्रेडिट जैसे परोक्ष (proxy) संकेतकों पर निर्भर थे। आईएसपी वास्तविक सेवा उत्पादन की प्रत्यक्ष, मासिक ट्रैकिंग प्रदान करता है।
- **आधुनिक डेटा बुनियादी ढांचे का लाभ उठाना:** पारंपरिक सर्वेक्षणों के विपरीत, जो भौतिक रूप से डेटा एकत्र करने में देरी का सामना करते हैं, आईएसपी आधुनिक प्रशासनिक डेटासेट का उपयोग करता है, जिसमें एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (GST) बाहरी आपूर्ति रिटर्न (GSTR-1) और 'इनकॉर्पोरेटेड सर्विसेज सेक्टर एंटरप्राइजेज का वार्षिक सर्वेक्षण' (ASISSE) शामिल हैं। यह एकीकरण करदाता की गोपनीयता बनाए रखते हुए डेटा की सटीकता सुनिश्चित करता है।
- **गैर-बाजार अस्थिरता को बाहर रखना:** वास्तविक व्यावसायिक गति की सटीक तस्वीर पेश करने के लिए आईएसपी का ध्यान व्यवस्थित रूप से व्यापार, परिवहन, रसद, बैंकिंग और आईटी जैसी बाजार-संचालित

सेवाओं पर केंद्रित है, जबकि यह जानबूझकर गैर-बाजार और सरकारी सेवाओं (जैसे रक्षा और लोक प्रशासन) को बाहर रखता है।

#### साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण को बढ़ाना: ISP बनाम IIP

| मापदंड / पैरामीटर | औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)                                                                   | सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP)                                                                                                |
|-------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| क्षेत्रीय फोकस    | द्वितीयक क्षेत्र (खनन, विनिर्माण, विद्युत)।                                                      | तृतीयक क्षेत्र (व्यापार, आतिथ्य, आईटी, वित्त, परिवहन)।                                                                    |
| आधार वर्ष         | 2011-12 (पुराना, जो आधुनिक उच्च तकनीक उद्योगों को शामिल करने में विफल है)।                       | 2024-25 (समकालीन आर्थिक संरचनाओं को दर्शाता है)।                                                                          |
| डेटा स्रोत        | विनिर्माण इकाइयों द्वारा जमा किए गए भौतिक उत्पादन सर्वेक्षण।                                     | प्रत्यक्ष डिजिटल पाइपलाइनें, जिसमें जीएसटी डेटा (GST-1) और प्रशासनिक डेटाबेस शामिल हैं।                                   |
| नीतिगत उपयोगिता   | औद्योगिक स्वास्थ्य की निगरानी में मदद करता है लेकिन कुल रोजगार के 20% से भी कम को ट्रैक करता है। | रोजगार-गहन क्षेत्रों में उच्च-आवृत्ति अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे त्वरित राजकोषीय और मौद्रिक नीतियां संभव होती हैं। |

#### नीतिगत निहितार्थ

- मौद्रिक नीति सटीकता:** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की मौद्रिक नीति समिति (MPC) अब वास्तविक उत्पादन प्रवृत्तियों के साथ-साथ सेवाओं की मुद्रास्फीति की निगरानी कर सकती है, जिससे रेपो दरों में अधिक सटीक समायोजन संभव हो सकेगा।
- व्यावसायिक चक्र का पूर्वानुमान:** सेवाओं के लिए मासिक समय-श्रृंखला डेटा की उपलब्धता अर्थशास्त्रियों और कॉर्पोरेट योजनाकारों को क्षेत्रीय मंदी की जल्द पहचान करने की अनुमति देती है, जिससे व्यापक आर्थिक मंदी को रोकने में मदद मिलती है।

#### निष्कर्ष

सेवा उत्पादन सूचकांक (ISP) की शुरुआत भारत की आर्थिक ट्रैकिंग में लंबे समय से चले आ रहे एक बड़े अंतर को दूर करती है। IIP के पूरक के रूप में, ISP भारतीय अर्थव्यवस्था का एक व्यापक, उच्च-आवृत्ति दृश्य प्रदान करता है, जिससे नीति निर्माण को प्रतिक्रियाशील समायोजन से हटाकर सक्रिय, डेटा-संचालित शासन की ओर ले जाने में मदद मिलती है।

